कुंन से और नूर से, ए दोऊ पैदास।
रूहें उतरीं अर्स अजीम से, कही असल खासल खास।।७६ ।।

कुंन से जीवसृष्टि और नूर (अक्षर) से ईश्वरीसृष्टि की पैदाइश कही है। ब्रह्मसृष्टि परमधाम से उतरी है जो श्री राजजी महाराज की खासल खास अंगना कही है।

ए इलम-इलाही देत हों, तो भी छूटत नहीं तिलसम।
हकें पेहेले कह्या भूलोगे, न मानोगे हुकम।।७७ ।।

ऐसा जागृत बुद्धि का ब्रह्म ज्ञान तुमको देता हूं फिर भी माया तुमसे नहीं छूटती। श्री राजजी महाराज ने पहले से ही कहा था कि ब्रह्मसृष्टि हुकम को नहीं मानेगी।

सोई बातें अब मिली, भूल गैयां घर तुम।
भूली आप और हक को, भूलियां अकल इलम।।७८ ।।

वह सब बातें यहां आने पर सत दिखाई पड़ीं और ब्रह्मसृष्टियां घर को, अपने आपको, श्री राजजी को, अक्ल को और इलम को भूल गईं।

फुरमान रसूल ले आइया, रूहअल्ला संदेसे।
असल इलम दे दे थके, अजूं न आवे अकल में ए।।७९ ।।

रसूल साहब कुरान ले आए और श्यामा महारानी सन्देश ले आईं और सच्चा ज्ञान दे देकर थक गईं। हाय! हाय! फिर भी यह बातें अक्ल में नहीं आतीं।

कही बड़ी मेहेर रसूलें, जो हुई माहें रात मेयराज।
फजर होसी जाहेर, सो रोज कयामत है आज।।८० ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की रात्रि में पारब्रह्म से जो बातें हुईं, उन बातों में श्री राजजी महाराज की मेहर अपार है, बताया। और कहा कि यह सब बातें सवेरा होने पर जाहिर हो जाएंगी। यह वही कयामत का दिन आज है।

तो मजकूर मेयराज का, ए जो किया जाहेर मेहेरबान।
मोमिन देखो हक सहूर से, खोली मारफत-फजर सुभान।।८१ ।।

मेयराज (दर्शन) की रात की श्री राजजी महाराज ने हकीकत को जाहिर किया। हे मोमिनो! उसको विचार कर देखो। धनी ने (श्री राजजी महाराज ने) पहचान कराकर ज्ञान का सवेरा कर दिया।

महामत कहे ऐ मोमिनों, अजूं फरामोसी न जात।
बेसक देखो दिन बका, माहें मेयराज की रात।।८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम्हारी फरामोशी अभी तक नहीं जाती। निःसन्देह उस अखण्ड परमधाम को देख लो जिसका वर्णन मेयराज की रात्रि में किया है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ९५८ ।।

मेहेर हुई महंमद पर, खोले नूरतजल्ला द्वार।
सब मेयराज में लेय के, दिया हकें दीदार।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद साहब पर कृपा की और उन्हें शबे मेयराज में बुलाकर दर्शन दिया और परमधाम के दरवाजे खोले।

Nijanand App

बीच बका के पोहोंचिया, जित जले जबराईल पर।
तित नब्बे हजार हरफ सुने, फिरे जो मजकूर कर।। २ ।।

रसूल साहब अखण्ड परमधाम में पहुंचे जहां जबराईल के पर जलते हैं। वहां जाकर नब्बे हजार हरफ सुने और फिर चर्चा की।

हुकम हुआ इमाम को, खोल दे द्वार रूहन।
आवें सब मेयराज में, दिल देखें अर्स मोमिन।। ३ ।।

इमाम (श्री प्राणनाथजी) को हुकम हुआ कि रूहों को सब दरवाजे खोल दो। उनके दिल भी घर को तथा परआतम को शबे मेयराज (दर्शन की रात्रि) की तरह देखें।

खिलवत सब मेयराज में, जो रूहों करी अव्वल।
सो खोले हक हादीय की, ज्यों देखें हकीकी दिल।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने, शबे मेयराज में जो रूहों से अव्वल खिलवत में बातें कीं और श्री राजजी श्यामाजी के वार्तालाप को इस तरह से जाहिर कर दिया कि सच्चे दिल वाले मोमिन उसे देखकर समझ लें।

आखिर गिरो जो रूहन, सब मेयराज में आराम।
याको दई इमामें हुकमें, वाहेदत की अर्स ताम।। ५ ।।

ब्रह्मसृष्टियों की जमात को शबे मेयराज में ही आराम मिलेगा। श्री राजजी महाराज के हुकम से इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने मोमिनों को यह आत्मा की खुराक दी।

खिलवत हक हादी रूहन की, कबूं न जाहेर किन।
सो रूह अल्ला ने रूहसों, तिन कही आगे मोमिन।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों की एकान्त के सुखों की बात किसी को मालूम नहीं थी। वह श्यामा महारानी ने श्री इन्द्रावतीजी को और श्री इन्द्रावतीजी ने सुन्दरसाथ को बताया।

एक समे हक हादी रूहें, मिल किया मजकूर।
रब्द किया इस्क का, सबों आप अपना जहूर।। ७ ।।

एक समय श्री राजजी महाराज और श्यामाजी और रूहों ने आपस में मिलकर वार्तालाप किया। उसमें सबने अपने-अपने इश्क का वर्णन किया।

रूहें कहें सब मिल के, हक के आसिक हम।
इस्क पूरा है हम में, ए नीके जानो तुम।। ८ ।।

सब रूहों ने मिलकर कहा कि हम श्री राजजी महाराज के आशिक हैं और हमारे अन्दर इश्क पूर्ण है। यह तुम अच्छी तरह समझ लो।

और आसिक बड़ी रूह के, इनमें नाहीं सक।
इस्क हमारे रूहन के, जानत हैं सब हक।। ९ ।।

हम श्यामा महारानी के भी आशिक हैं। इसमें जरा सन्देह नहीं है। हम रूहों के इश्क को श्री राजजी महाराज अच्छी तरह जानते हैं।

Nijanand App

बड़ी रूह कहे मुझ में, हक का पूरा इस्क।
रूहें प्यारी मेरी रूह की, इनमें नाहीं सक।। १० ।।

श्यामा महारानी ने कहा कि श्री राजजी महाराज को मैं पूर्ण रूप से चाहती हूं और मेरी रूहें भी मुझे बहुत प्यारी हैं। इसमें सन्देह नहीं है।

तब हकें कह्या सबन को, मैं तुमारा आसिक।
और आसिक बड़ी रूह का, कौन मेरे माफक।। ११ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने सभी से कहा कि मैं तुम्हारा आशिक हूं और श्यामा महारानी का आशिक हूं। तुम में से कोई भी मेरे समान इश्क नहीं कर सकता।

खबर मेरे इस्क की, तुम जानी नहीं किन।
इस्क बड़े सबों अपने, तो कहे रूहन।। १२ ।।

मेरे इश्क की जानकारी तुम्हें किसी को नहीं है, इसलिए तुम सबने अपने-अपने इश्क को बड़ा बताया है।

और पातसाही मेरे अर्स की, तुमको नहीं खबर।
इस्क सबों को अपने, तो बड़े आए नजर।। १३ ।।

मेरे परमधाम की बादशाही की खबर तुम्हें नहीं है, इसलिए तुम सबको अपना-अपना इश्क बड़ा दिखाई पड़ा।

बुजरक इस्क अपना, तोलों देख्या तुम।
कादर की कुदरत की, तुमको नाहीं गम।। १४ ।।

जब तक तुमको अक्षर ब्रह्म की माया की पहचान नहीं है, तब तक तुम अपने इश्क को बड़ा समझ रहे हो।

साहेबी अर्स अजीम की, तुमें नजर आवे तब।
नूर-तजल्ला नूर थें, जुदे होए देखो जब।। १५ ।।

तुम्हें अखण्ड घर परमधाम की साहिबी का पता नहीं है। यह तुम्हें तब समझ आएगी जब अक्षरातीत और अक्षर से जुदा होकर देखोगे।

खबर तुमारे इस्क की, तो होवे जाहेर।
सब मिल जाओ इत थें, बका से बाहेर।। १६ ।।

तब तुम्हारे इश्क का पता चलेगा, जब यहां से सब मिलकर अखण्ड घर से बाहर जाओ।

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहन को, पेहेले दिल में लिया हक।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज ने अर्श की बादशाही और वाहिदत (एकदिली) का इश्क रूहों को दिखाने के लिए दिल में लिया।

Nijanand App

कहूं विध वाहेदत की, बात करनी हकें जे।
सो अपने दिल पेहेले लेय के, पीछे आवे दिल वाहेदत के।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं परमधाम का तरीका बताती हूं। श्री राजजी जो करना होता है, उस बात को पहले दिल में लेते हैं। उसके बाद वही बात मोमिनों के दिल में आती है।

पोहोर दिन से चार घड़ी लग, बरस्या हक का नूर।
इस्क तरंग सबों अपने, रोसन किए जहूर।। १९ ।।

प्रातः नौ बजे से साढ़े दस बजे तक परमधाम में श्री राजजी महाराज की नजरे करम हुई। वार्तालाप होता रहा। सभी ने अपने इश्क की तरंगों को जाहिर किया।

अपने अपने इस्क का, सबों देखाया भार।
तोलों किया रब्द, दिन पीछला घड़ी चार।। २० ।।

अपने-अपने इश्क को सभी ने बड़ा बताया। सायं के साढ़े चार बजे तक यही बहस होती रही।

एह बातें असल की, करते इस्क सों प्यार।
हंसते खेलते बोलते, एही चलत बारंबार।। २१ ।।

यह सब बातें मूल परमधाम की हैं जहां इश्क और प्यार की बातें करते हैं। उस दिन हंसते-खेलते और बोलते हुए यही एक चर्चा का विषय था।

अपना अपना इस्क, बड़ा जानत सब कोए।
बीच बका के बेवरा, इस्क का न होए।। २२ ।।

सब कोई यही जान रहा था कि हमारा इश्क सबसे बड़ा है, परन्तु अखण्ड परमधाम में इश्क के अन्तर का फैसला नहीं हो सकता था।

इस्क का हक हादी रूहें, रब्द किया माहों-माहें।
सो हक से बीच अर्स के, घट बढ़ होवे नाहें।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज श्यामा महारानी और रूहों ने आपस में बहस किया। श्री राजजी महाराज से परमधाम में कुछ कम ज्यादा नहीं हो सकता।

जित जुदागी जरा नहीं, तित बेवरा क्यों होए।
ताथें रूहें रब्द हक का, क्यों ए ना निबरे सोए।। २४ ।।

जहां जरा सी भी जुदाई न हो सकती हो वहां कम ज्यादा का फैसला कैसे हो? इसलिए रूहों के और श्री राजजी महाराज के इश्क का निपटारा कैसे हो?

एक पात न गिरे अर्स बन का, ना खिरे पंखी का पर।
अपार जिमी की रूह कोई, कहूं जाए न सके क्योंए कर।। २५ ।।

जहां परमधाम के वनों का एक पत्ता भी नहीं गिरता और न पक्षी का पर गिरता है, उस अखण्ड भूमि, जिसका शुमार नहीं है, वहां की रूहें किसी जगह किसी तरह से भी बाहर नहीं जा सकतीं।

Nijanand App

आगूं वाहेदत जिमी के, कहूं नाम न जरा एक।
आगूं जरे वाहेदत के, उड़ें ब्रह्मांड अनेक।। २६ ।।

परमधाम की वाहेदत की जमीन के सामने किसी का नाम नहीं है, अर्थात् और दूसरा कुछ है ही नहीं। परमधाम के एक कण के सामने करोड़ों ब्रह्मांड उड़े जाते हैं।

रूहें उन वाहेदत की, ताए फरेब न रहे नजर।
सो क्यों पड़े फरेब में, देखो सहूर कर।। २७ ।।

रूहें उसी परमधाम की रहने वाली हैं। उनके सामने झूठा संसार नहीं रह सकता। ऐसी आत्माएं झूठे संसार में कैसे आतीं, जरा विचार कर देखो।

मौत उत पैठे नहीं, कायम अर्स सुभान।
ठौर नहीं अबलीस को, जरा न कबूं नुकसान।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज का परमधाम अखण्ड है। वहां काल पहुंच ही नहीं सकता, अर्थात् वहां कोई नहीं मरता। वहां शैतान अबलीस के लिए भी जगह नहीं है, इसलिए वहां कुछ नष्ट नहीं होता।

अर्स बका वाहेदत में, सुध इस्क न होवे इत।
जुदे जुदे हो रहिए, इस्क सुध पाइए तित।। २९ ।।

अखण्ड परमधाम में इश्क की सुध नहीं होतीं। जहां अलग-अलग रहें, वहां इश्क की सुध होती है।

वाहेदत में सुध इस्क की, पाइए नहीं क्यों ए कर।
घट बढ़ इत है नहीं, अर्स में एकै नजर।। ३० ।।

परमधाम में इश्क की सुध किसी तरह से नहीं मिलती, क्योंकि वहां कम ज्यादा नहीं होता है। परमधाम में सब एक समान ही रहते हैं।

बिना जुदागी इस्क की, क्यों कर पाइए खबर।
सो तो बका में है नहीं, सब कोई बराबर।। ३१ ।।

बिना अलग हुए इश्क की पहचान कैसे हो? यह वियोग तो परमधाम में है नहीं। वहां सब कुछ एक समान है।

कोई बात खुदा से न होवहीं, ऐसे न कहियो कोए।
पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होए।। ३२ ।।

कोई काम खुदा नहीं कर सकता, ऐसा कोई न कहना। पर एक बात उस अखण्ड परमधाम में है जिसे श्री राजजी महाराज भी नहीं कर सकते (अपनी आत्माओं को अपने से अलग नहीं कर सकते)।

कौल फैल हाल बदले, पर ना छूटे रूह इस्क।
रूह इस्क दोऊ बका, इनमें नाहीं सक।। ३३ ।।

कहनी, करनी और रहनी बदल सकती है, परन्तु रूहों का इश्क नहीं छूट सकता। परमधाम की रूहें और इश्क दोनों अखण्ड हैं। इसमें कोई संशय नहीं है।

Nijanand App

दिल फिरे रंग फिरत है, जुसा जोस बदलत।
पर असल इस्क ना बदले, जो नेहेचल रूह न्यामत।। ३४ ।।

दिल बदलने के साथ ही भाव बदल जाता है। शरीर और जोश बदल सकता है, परन्तु हकीकी इश्क नहीं बदल सकता। वही रूहों का मूल खजाना है।

रूहों सबों इस्क का, किया बड़ा मजकूर।
इस वास्ते बेवरा इस्क का, मुझे देखलावना जरूर।। ३५ ।।

श्री राजजी कहते हैं हे श्यामाजी! रूहों ने आज इश्क की बड़ी चर्चा की, इसलिए अब इश्क का फैसला अवश्य ही दिखाना है।

इस्क बेवरा देखने, एक तुमें देखाऊं ख्याल।
इस्क तअल्लुक रूह के, छूटे ना बदले हाल।। ३६ ।।

तब श्री राजजी ने रूहों से कहा, हे मोमिनो! मैं तुम्हें इश्क का फैसला करने के लिए एक खेल दिखाता हूं। इश्क का नाता तो आत्मा से है न वह टूट सकता है और न बदल सकता है।

रूहें अर्स अजीम की, ताए लगे न कोई नुकसान।
ऐसा खेल देखाऊं तुमें, जो कछू ना रहे पेहेचान।। ३७ ।।

रूहें तो अर्श अजीम की हैं। उनको कोई नुकसान नहीं हो सकता, परन्तु मैं तुम्हें ऐसा खेल दिखाऊंगा। जहां किसी को किसी तरह की पहचान नहीं रहेगी।

ऐसा इस्क तुम पे, रूह से क्यों ए ना छूटत।
पर ए खेल इन भांत का, जगाए भी न जागत।। ३८ ।।

हे रूहो! तुमारा इश्क तुमसे किसी तरह से नहीं छूट सकता। पर यह खेल फरामोशी का ऐसा है कि कोई जगाने पर भी नहीं जागता।

मैं छिपोंगा तुमसे, तुम पाए न सको मुझ।
ना पाओ तरफ मेरीय को, ऐसा खेल देखाऊं गुझ।। ३९ ।।

मैं तुमसे छिप जाऊंगा। तुम मुझे नहीं पा सकोगे मेरी तरफ का पता नहीं चलेगा। ऐसा इन्द्रजाल का माया वाला खेल दिखाऊंगा।

और कहूं जाए छिपोगे, के हमको करोगे दूर।
के इतहीं बैठे देखाओगे, धनी अपने हजूर।। ४० ।।

रूहें कहती हैं, हे धनी! आप कहीं छिप जाओगे या हमको अपने से दूर करोगे, या अपने सामने यही बिठाकर खेल दिखाओगे?

दूर कहूं ना जाऊंगा, तुम बैठो एकड़ चरन।
खेल देखोगे इतहीं, तुम मिल सब मोमिन।। ४१ ।।

श्री राजजी कहते हैं कि मैं दूर कहीं नहीं जाऊंगा। तुम चरण पकड़कर बैठो। तुम सब मिलकर यहीं बैठे-बैठे खेल देखोगे।

Nijanand App

हम सब मिल मोमिन बैठेंगे, पकड़ तुमारे चरन।
तब कहा करसी फरामोसी, जब बैठें होए एक तन।। ४२ ।।

रूहें कहती है कि हम सब मिलकर तुम्हारे चरण पकड़कर बैठती हैं। फिर जब हम एक तन होकर बैठेंगे तो फरामोशी हमारा क्या करेगी?

गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए।। ४३ ।।

हम एक दूसरे के गले में हाथ डालकर बैठेंगे। तब फरामोशी हमारा क्या करेगी? हम किसी तरह से तनिक भी अलग नहीं होंगे।

जेते कोई मोमिन, सो बैठे तले कदम।
तो तुमारे रसूल का, फेरें नाहीं हुकम।। ४४ ।।

जितनी रूहें हैं, वह चरणों के तले बैठ गयीं। हम तुम्हारे रसूल के हुकम को नहीं टालेंगे।

जो मुनकर हुकम सों, मोमिन कहिए क्यों ताए।
द्यो फरामोसी हम को, देखो सौ बेर अजमाए।। ४५ ।।

जो रसूल साहब के द्वारा भेजे हुए आपके हुकम से मुनकर होगा, उसे मोमिन मत कहना। हमको फरामोशी दो और सौ बार आजमा लो।

सो कैसा मोमिन, अर्स की अरवाहें।
हम कदमों बीच अर्स के, क्यों जासी भुलाए।। ४६ ।।

वह कैसा मोमिन, कैसी परमधाम की अरवाह जो आपके चरणों के तले बैठकर आपको भूल जाएं।

जेती रूहें अर्स की, ताए फरामोसी ना जाए जीत।
कछू पड़े बीच अपने, ए नहीं इस्क की रीत।। ४७ ।।

जितनी परमधाम की रूहें हैं, उनको फरामोशी नहीं जीत सकती। हमारे और आपके बीच कुछ आ जाए, यह इश्क का तरीका नहीं है।

कछुए न चले फरामोस का, हम आगूं हुए चेतन।
इस्क हमारे रूह के, असल है एक तन।। ४८ ।।

हम पहले से ही सावचेत हो गए हैं। अब फरामोशी का हमारे ऊपर कुछ जोर नहीं चलेगा। हम सब मूल से एक तन हैं।

बका आड़े पट करों, तुम देख न सको कोए।
झूठे मिलावे कबीले, तुम देखोगे सब सोए।। ४९ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा परमधाम के आगे माया का परदा लगा दूंगा। तुम सब उसे देख न पाओगे। संसार में जाकर तुम झूठे कबीलों में मिल जाओगे। तुम सब उस माया को देखने लगोगे।

बैठियां सब मिल के, अंग सों अंग लगाए।
उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए।। ५० ।।

तब सब मोमिन अंग से अंग जोड़कर बैठ गए हो। श्री राजजी कहते हैं कि अब मैं तुम्हें अलग-अलग देशों में नए-नए तनों में उठाऊंगा।

Nijanand App

पर ऐसा देखोगे तिलसम, जो सबे हुई फरामोस।
इलम देऊं मेरा बेसक, तो भी न आओ माहें होस।।५१ ।।

तुम सब बेसुध होकर माया का जाल देखोगे। मैं अपना जागृत बुद्धि का इलम भेजूंगा। फिर भी तुम होश में नहीं आओगे।

एह खेल ऐसा है, तुम अपना कबीला कर।
कोई न किसी को पेहेचाने, बैठो जुदे जुदे कर घर।।५२ ।।

संसार का ऐसा खेल है, तुम अपना-अपना अलग परिवार बनाकर बैठ जाओगी। अपने अलग-अलग घर करके कोई किसी को नहीं पहचानेगा।

तेहेकीक जानोगे झूठ है, तो भी दिल से न छूटे एह।
ऐसी मोहोब्बत बांधोगे, झूठै सों सनेह।।५३ ।।

तुम जान जाओगे कि संसार झूठा है। फिर भी तुम उस माया से न छूट पाओगे। अपने झूठे कुटुम्ब परिवार से ही ऐसा झूठा प्रेम बांध लोगे।

वाही जानोगे न्यामत, और वाही से करोगे प्यार।
सुख दुख सारा झूठ का, वाही कुटम परिवार।।५४ ।।

तुम उसी झूठे परिवार को ही न्यामत समझोगे और उससे प्यार करोगे, जबकि दुःख, सुख, कुटुम्ब परिवार झूठ के हैं।

आग पानी पूजोगे, या सूरत बनाए पत्थर।
कहोगे हमारा हक है, सब की एह नजर।।५५ ।।

आग पानी की पूजा करोगे, पत्थर की मूर्ति बनाकर पूजा करोगे और कहोगे कि यही हमारा परमात्मा है। तुम सबकी ऐसी ही दृष्टि हो जाएगी।

आसमान जिमी पाताल लग, सब झूठे झूठ मन्डल।
ऐसे झूठे खेल में, तुम जाओगे सब रल।।५६ ।।

आसमान, जमीन से पाताल तक सब झूठ का ही मण्डल है। ऐसे झूठे खेल में जाकर तुम उसमें हिल मिल जाओगे।

हक इनों में न पाइए, ना कछू सुनिया कान।
सांच न पाइए इनों में, ए झूठे फना निदान।।५७ ।।

ऐसे सारे झूठे खेल में पारब्रह्म नहीं मिलेंगे, न उनकी कुछ खबर ही सुनाई पड़ेगी, क्योंकि यह सब नाशवान है जो अन्त में नष्ट हो जाएगा, इसमें सत नहीं मिलेगा।

झूठा खेल कबीले झूठे, झूठे झूठा खेलें।
सब झूठे पूजें खाएं पिएं झूठे, झूठे झूठा बोलें।।५८ ।।

इस झूठे खेल में, झूठे परिवार में, झूठे जीव ही झूठ का खेल खेलते हैं। सब झूठ की ही पूजा करते हैं। झूठा खाते-पीते हैं और झूठा बोलते हैं।

Nijanand App

झूठा सब लगेगा मीठा, झूठा कुटम परिवार।
सुख दुख इनमें झूठी चरचा, हुआ सब झूठै का विस्तार।।५९।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं, हे मोमिनो! तुमको यह झूठा ही मीठा लगेगा। झूठे कुटुम्ब, परिवार, सुख-दुःख झूठ हैं। इसमें झूठ की चर्चा और सब जगह झूठ ही झूठ होगा।

इस्क तुमारा तो सांचा, मोहे याद करो बखत इन।
रब्द किया तुम मुझसों, बीच बका वतन।।६०।।

तुम्हारा इश्क तभी सच्चा होगा यदि ऐसे वक्त में मुझे याद करोगे, क्योंकि तुमने अखण्ड घर परमधाम के बीच में बैठकर मेरे से इश्क का विवाद किया है, अन्यथा इश्क की परख नहीं होगी।

ऐसी तो कोई ना हुई, बिना इलम होवे हुसियार।
हांसी बिना कोई ना रही, छोड़ ना सके अंधार।।६१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसी कोई आत्मा नहीं है जो बिना तारतम ज्ञान के जागृत हुई हो। यहां कोई भी आत्मा माया को नहीं छोड़ सकी, इसलिए हंसी के बिना कोई नहीं बची।

इलम मेरा लेय के, निसंक दुनी से तोड़।
सोई भला इस्क, जो मुझ पे आवे दौड़।।६२।।

मेरा तारतम ज्ञान लेकर, संशय मिटाकर, दुनियां से नाता तोड़ लो, उसी का इश्क सच्चा होगा जो मेरे पास दौड़कर आएगा।

झूठा खेल देखाइया, चौदे तबक की जहान।
एक कंकरी होवे अर्स की, तो उड़े जिमी आसमान।।६३।।

चौदह लोकों की दुनियां का यह झूठा खेल दिखाया है। खेल की जमीन से आसमान तक परमधाम की एक कंकरी के सामने मिट जाते हैं।

ज्यों नींद में सुपन देखिए, कई लाखों वजूद देखाए।
आंखां खोले उड़े फरामोसी, वह तबहीं मिट जाए।।६४।।

यहां संसार में जैसे स्वप्न में लाखों लोग दिखाई देते हैं और नींद खुलते ही सब मिट जाते हैं।

फुरमान लिखूं तुमको, और भेजोंगा पैगाम।
तुम कहोगे किन भेजिया, किनके एह कलाम।।६५।।

मैं तुमको कुरान लिखकर भेजूंगा फिर श्री श्यामाजी के हाथ सन्देश भेजूंगा। तुम हैरान होकर पूछोगे यह किसने भेजा? भेजने वाला कौन है? और किसके यह वचन हैं।

कहां है हमारा खसम, और वतन हमारा कित।
चौदे तबकों में नहीं, ए किनकी किताबत।।६६।

तुम पूछोगे हमारा धनी कहां है? अखण्ड घर कहां है? यह चौदह लोकों के ग्रन्थों का ज्ञान नहीं, यह किसके ज्ञान की किताब है?

Nijanand App

अपन आए वास्ते मजकूर, अर्स से उतर।
तो ए दुनियां जो तिलसम की, सो माने क्यों कर।। ६७ ।।

हम खेल में परमधाम से इश्क के वार्तालाप के अनुसार उतर कर आए हैं। यह झूठी इन्द्रजाल की दुनियां इसे क्यों मानेगी।

एह न पावें अर्स को, ना कछू पावें हक।
ना कछू समझें इलम को, ए आप नहीं मुतलक।। ६८ ।।

यह अखण्ड घर और श्री राजजी महाराज को नहीं पा सकते। यह तारतम ज्ञान को नहीं समझ सकते, क्योंकि यह स्वयं ही अखण्ड नहीं हैं।

ए जो ढूंढ़त दुनियां, सो सब तिलसम के।
ए क्यों पावें हक बका, तन असल नाहीं जे।। ६९ ।।

यह जो इन्द्रजाल की दुनियां वाले हैं वह दुनियां में दुनियां को ही ढूंढ़ रहे हैं। जिनके तन अखण्ड नहीं हैं वह अखण्ड श्री राजजी महाराज को कैसे पाएंगे?

पैदा आदम हवा से, हिरस हवा सैतान।
इन बिध की ए पैदास, केंहेवत कुरान पुरान।। ७० ।।

जो आदम और हव्वा (आदि नारायण-कमला) की औलाद हैं और जिनके मन में माया की चाहना और शैतान की बैठक है, कुरान-पुराण दोनों ने संसार की उत्पत्ति को इसी प्रकार से ही बताया है।

रल गए वाही खेल में, कछू रही न असल बुध।
रूहअल्ला कहे सौ बेर, तो भी आवे न दिल सुध।। ७१ ।।

खेल में आकर मिल गए और परमधाम की बुद्धि नहीं रही। श्री श्यामाजी महारानी भी सौ बार कहती हैं। फिर भी सुध नहीं आती।

देखा देखी करो इनकी, बैठे तिलसम माहें।
तुम आए बका वतन से, ए मुतलक कछुए नाहें।। ७२ ।।

हे मोमिनो! तुम माया में बैठकर यहां के जीवों की देखा देखी करके वैसा ही आचरण करते हो (जीवों जैसी चाल चलते हो)। तुम अखण्ड परमधाम से आए हो और यह संसार निश्चित ही कुछ नहीं है।

ए तिलसम खेल फना से, खेलत फना माहें।
आखिर सब फना होवहीं, इत कायम जरा नाहें।। ७३ ।।

यह इन्द्रजाल का खेल नाश होने वाली शक्तियों से बना है और अन्त में सब नष्ट हो जाएगा। यहां अखण्ड कुछ नहीं है।

पट आड़ा बका वतन के, एही हुई फरामोस।
जो याद करो हक वतन, इस्क न आवे बिना होस।। ७४ ।।

अखण्ड परमधाम के आड़े यही फरामोशी का परदा है। तुम श्री राजजी महाराज और घर को याद करो। बिना उनके इश्क के होश में नहीं आ सकते।

Nijanand App

बेसक झूठ देखाइया, सो क्यों देखें हमको।
रूहें लेवें इलम बेसक, तब पोहोंचें बका मों।।७५।।

श्री राजजी कहते हैं कि निश्चित ही मैंने रूहों को झूठा खेल दिखाया है, तो अब रूहें मुझे कैसे देख सकती हैं? रूहें जब तारतम ज्ञान से संशय रहित हो जाएंगी तभी अखण्ड परमधाम आएंगी।

तुम देख्या तिन मुलक को, जित जरा ना इस्क।
इत बेसक क्यों होवहीं, जित खबर न पाइए हक।।७६।।

तुमने उस संसार को देखा है जहां जरा भी इश्क नहीं है। जहां पारब्रह्म की खबर देने वाला कोई नहीं हो, तो वहां संशय रहित कोई कैसा हो सकता है?

रूहें उन मुलक से, फिर ना सकें वतन।
फरेब क्यों ए ना छूटहीं, हक के इस्क बिन।।७७।।

संसार में रूहों को जब तक श्री राजजी का इश्क नहीं मिलेगा माया नहीं छूटेगी। तब तक वह घर वापस नहीं आ सकतीं।

ऐसी रूहें वाहेदत की, ताए फरेब पोहोंचे क्यों कर।
ए बड़ा रूहों का तअजुब, जो बांधी झूठ सों नजर।।७८।।

ऐसे एकदिली वाले परमधाम की जो रूहें हैं, उन्हें यह झूठा संसार कैसे पकड़ सकता है? यह भी बड़ी हैरानी वाली बात है कि रूहों की नजर झूठ से बंध गई है।

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले।
तुमें तो भी याद न आवहीं, कोई आए बनी ऐसी ए।।७९।।

मैंने अपनी दिल की बातें कहकर श्री श्यामाजी को भेजा। रूहों को फिर भी घर की याद नहीं आती। हालत रूहों की कुछ ऐसी ही हो गई है।

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल।
सो भेजी मैं तुम पे, जो करियां आपन मिल।।८०।।

यह सब बातें मेरे दिल की और रूहों के दिल की हैं जो हम सबने मिल बैठकर की थीं, मैंने श्यामाजी के द्वारा तुम्हारे पास कहलवा दी हैं।

ए बातें सब असल की, जब याद दई तुम।
तब इस्क वाली रूहों को, क्यों न उड़े तिलसम।।८१।।

यह बातें सब परमधाम की जब तुम्हें याद दिला दी गईं तो इश्क का दावा लेने वाली रूहें झूठे इन्द्रजाल के संसार को क्यों नहीं छोड़तीं।

जब लग लगे दुनियां, तब पोहोंचे न बका मों।
एक रूह दूजा इस्क, आए काम पड़या इनसों।।८२।।

जब तक दुनियां में माया की चाह लगी रहेगी, तब तक अखण्ड में नहीं आ सकती। अखण्ड में आने के लिए एक आत्मा होनी चाहिए, दूसरा उसे इश्क होना चाहिए। इन दोनों बातों की जरूरत है।

Nijanand App

दूजा कछू पोहोंचे नहीं, हक को बीच बका।
जहां रूह न होवे एकली, छोड़ सबे इतका।। ८३ ।।

दूसरा कोई अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज के पास नहीं पहुंच सकता। जब तक रूह संसार का सब कुछ छोड़कर विरक्त न हो जाए, तब तक श्री राजजी को प्राप्त नहीं कर सकती।

बका बीच रूहन को, खेल देखावें हक।
आया गया इत कोई नहीं, ए इलम कहे बेसक।। ८४ ।।

अखण्ड परमधाम में बिठाकर श्री राजजी रूहों को खेल दिखाते हैं। वहां परमधाम से कोई आया गया नहीं है। यह तारतम वाणी से जाहिर है।

बेसक इलम सीख के, ऐसे खेल को पीठ दे।
देखो कौन आवे दौड़ती, आगूं इस्क मेरा ले।। ८५ ।।

तारतम ज्ञान से समझकर इस जगत को पीठ देकर देखें। कौन सी रूह मेरा इश्क लेकर दौड़कर आती है।

जब तुम भूले मुझ को, तब इस्क गया भुलाए।
अब नए सिर इस्क, देखो कौन लेय के धाए।। ८६ ।।

श्री राजजी कहते हैं कि जब तुम मुझे भूल गई तो तुम इश्क को भूल गई। अब नए सिरे से इश्क लेकर देखें कौन दौड़कर मेरे पास आती है।

याद करो इन इस्क को, जो रब्द किया सबों मिल।
सो इस्क अपना कहां गया, टिक्या नहीं पाव पल।। ८७ ।।

जो सबने मिलकर परमधाम में इश्क का रब्द किया, उस इश्क को याद करो। अब वह इश्क कहां चला गया। यह पाव (चौथाई) पल भी नहीं टिका।

सब ज्यादा केहेती अपना, करती अर्स में सोर।
असल रूहों के इस्क का, कहां गया एता जोर।। ८८ ।।

सब रूहें अपने इश्क को ज्यादा कहकर शोर मचाती थीं। अब उन रूहों के इश्क की ताक्त कहां चली गई?

किया रूहों सबों रब्द, पर आप न पकड़्या किन।
फरामोसी सबों फिरवली, हुई हांसी सबन।। ८९ ।।

सब रूहों ने इश्क का रब्द किया, पर अपनी शक्ति को किसी ने नहीं देखा। फरामोशी ने सबको घेर लिया, इसलिए सभी पर हंसी हुई।

जब इस्क गया सब थें, तब निकल आई पेहेचान।
जिनका इस्क जोरावर, ताए कछुक रहे निदान।। ९० ।।

जब सबसे इश्क चला गया तो उनकी पहचान भी हो गई। जिनके पास इतना अधिक इश्क था, अब उनके पास कुछ नहीं बचा।

Nijanand App

सब केहेती इस्क अपना, हमारा बेसुमार।
सो रह्या न जरा किन पे, हाए हाए दिया सबों ने हार।। ९१ ।।

सब रूहें कहती थीं कि हमारा इश्क बेशुमार है, परन्तु इश्क किसी के पास तनिक नहीं रह गया। हाय! हाय! सभी ने अपना इश्क खो दिया, क्योंकि सभी अपने इश्क को हार गईं।

इनों बोहोत लाड़ किए मुझसों, मैं एक किया इनों सों।
सो एक मेरे लाड़ में, सब बेहे गैयां तिनमों।। ९२ ।।

इन रूहों ने परमधाम में मुझसे बहुत लाड़ किए थे। मैंने इनसे एक लाड़ किया। मेरे इस एक ही लाड़ में सबकी सब बह गईं (भूल गईं)।

और इस्क भी जोरावर, तिनकी एह चिन्हार।
जिन घट सुनत आवहीं, सोई जानो सिरदार।। ९३ ।।

इश्क के ज्यादा होने की एक यह पहचान है कि धनी का नाम सुनते ही जिसको इश्क आ जाए, वही सब की सिरदार (प्रधान) है।

और भी बेवरा इस्क का, जिनका होए बुजरक।
ताए याद दिए क्यों न आवहीं, ऐसा क्यों जाए मुतलक।। ९४ ।।

और भी इश्क का ब्यौरा है जिनका इश्क बड़ा है उनको याद दिलाने पर इश्क क्यों नहीं आता? उनका इश्क कहां चला गया?

रूहें बात सुनते हक की, तुरत ही करें सहूर।
जब सहूर रूहें पकड़े, तो इस्क क्यों न करे जहूर।। ९५ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज की बात सुनकर तुरन्त ही विचार करती हैं। जब विचार कर लेती हैं तो इश्क प्रगट क्यों नहीं होता?

और भी पेहेचान इस्क की, जो बढ़ के घट जाए।
इस्क रूहों का हक सों, क्यों कहिए बका ताए।। ९६ ।।

इश्क की एक यह भी पहचान है कि यदि वह बढ़कर घट जाए तो वह रूहों का इश्क परमधाम का नहीं है।

इस्क हक का सो कहिए, जो इस्क है कायम।
एक जरा कम न होवहीं, बढ़ता बढ़े दायम।। ९७ ।।

जो इश्क अखण्ड है, वही परमधाम का सच्चा इश्क है जो श्री राजजी महाराज का है। इसमें तनिक भी कमी नहीं होती। यह निरन्तर बढ़ता ही रहता है।

मेरा छूट्या न इस्क रूहों सों, नजर न छूटी निसबत।
रूहों छूटी इस्क निसबत, ऐसी भूल गैयां खिलवत।। ९८ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मेरा इश्क रूहों से नहीं छूटा है और न मेरी नजर ही उनसे हटी है, परन्तु रूहों का इश्क से सम्बन्ध छूट गया और वह अपने मूल-मिलावे की बातें भूल गई हैं।

Nijanand App

किया मजकूर इस्क का, अजूं सोई है साइत।
पड़े बीच फरामोस के, तुम जानो हुई मुद्दत।। ९९ ।।

रूहों ने परमधाम में जब इश्क का वार्तालाप किया था, अभी वहां वही पल है। तुम सब फरामोशी की नींद में पड़ने से समझती हो कि मुद्दत बीत गई।

सक छूटी अर्स हक की, सब बातों हुई बेसक।
तब अर्स अरवाहों को, क्यों न आवे इस्क।। १०० ।।

अब परमधाम की और श्री राजजी महाराज की सभी बातों के संशय समाप्त हो गए हैं। तो फिर अब अर्श की रूहों को अर्श का इश्क क्यों नहीं आता?

तोलों चले ना इस्क का, जोलों आड़ी पड़ी सक।
सो सक जब उड़ गई, तब क्यों न आवे इस्क हक।। १०१ ।।

जब तक संशय बाकी है तब तक इश्क की ताकत नहीं चलती। जब सब संशय उड़ गए तब धनी का इश्क क्यों नहीं आता?

अव्वल इस्क जिनों आइया, सोई अर्स अरवाहें।
नाहीं मुतलक मोमिन, जिनों लगे न बेसक घाए।। १०२ ।।

सबसे पहले जिनको इश्क आ गया वही परमधाम की रूहें हैं। जिन्हें धनी का सन्देश सुनकर चोट नहीं लगी, वह निश्चित ही मोमिन नहीं हैं।

बेसक इलम आइया, पाई बेसक हक दिल बात।
हुए बेसक इस्क न आइया, सो क्यों कहिए हक जात।। १०३ ।।

जागृत बुद्धि का बेशक इलम मिलने पर श्री राजजी महाराज के दिल की बातों का भी पता चल गया और संशय हट गए। फिर भी इश्क नहीं आया, तो उसे ब्रह्मसृष्टि (परमधाम की) कैसे कहा जाए?

बेसक इलम रूहअल्ला का, जो हैयात करे फना को।
मुरदे चौदे तबक के, उठें इन इलम सों।। १०४ ।।

श्यामा महारानी का तारतम ज्ञान बेशक है। वह मिटने वाले जीवों को अखण्ड कर देने वाला है। चौदह लोकों के मुरदार जीव इस ज्ञान से जागृत हो जाएंगे।

सो बेसक इलम ल्याइया, रूहअल्ला रूहन पर।
जो अरवाहें अर्स की, ताए इस्क न आवे क्यों कर।। १०५ ।।

श्यामा महारानी रूहों के वास्ते बेशक तारतम वाणी का ज्ञान लाईं। अब जो परमधाम की रूहें हैं उन्हें इश्क क्यों नहीं आता?

इलम हक का सुनत ही, इस्क न आया जिन।
तिनको नसीहत जिन करो, वह मुतलक नहीं मोमिन।। १०६ ।।

श्री राजजी महाराज का तारतम ज्ञान सुनकर जिसको इश्क नहीं आया वह निश्चित ही मोमिन नहीं है। उसे ज्ञान मत सुनाओ।

Nijanand App

है तीन वज्हे की उमत, इस्क बंदगी कुफर।
सो तीनों आपे अपनी, खड़ियां मजल पर।। १०७ ।।

संसार में तीन तरह की सृष्टियां हैं। एक पारब्रह्म से इश्क करने वाली, दूसरी बंदगी करने वाली और तीसरी इन्कार करने वाली। यह तीनों ही अपने-अपने रास्ते पर खड़ी हैं।

सो तीनों लेवें नसीहत, पर छूटे नहीं मजल।
जैसा होवे दरखत, तिन तैसा होवे फल।। १०८ ।।

यह तीनों ज्ञान सुनते हैं, परन्तु अपने-अपने रास्ते को नहीं छोड़ते। जैसा पेड़ होता है उसका फल भी वैसा ही होता है।

कोई बुरा न चाहे आप को, पर तिन से दूसरी न होए।
बीज बराबर बिरिख है, फल भी अपना सोए।। १०९ ।।

कोई भी इन्सान अपना बुरा नहीं चाहता, पर वह दूसरी चाल नहीं चल पाते। जैसा बीज होता है पेड़ भी वैसा होता है और उसका फल भी वैसा मिलता है।

खेल झूठा देख्या नजरों, सो ले खड़े सिर आप।
ताही में मगन भए, छोड़ कायम मिलाप।। ११० ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने झूठा खेल देखा और उसी को सिर पर ले बैठीं। उसी में मग्न हो रही हैं तथा अखण्ड परमधाम का मिलाप छोड़ बैठी हैं।

अब सो क्योंए याद न आवहीं, जो रूहअल्ला आया तबीब।
दारू न लगे तिनका, जाए हकें कह्या हबीब।। १११ ।।

अब परमधाम के वैद्य श्यामा महारानी आए हैं। तो भी हमें मूल घर की याद क्यों नहीं आती? जिनको श्री राजजी महाराज ने अपना प्यारा कहा है उनकी प्रेम की दवाई असर क्यों नहीं कर रही है?

चौदे तबक करसी कायम, दारू मसी का ए।
गई न फरामोसी रूहों की, आई हुकम सों जे।। ११२ ।।

वैद्य श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज के तारतम ज्ञान की ऐसी दवा है जिससे चौदह लोक अखण्ड हो जाएंगे, परन्तु रूहों की फरामोशी अभी तक नहीं टूटी, क्योंकि यह श्री राजजी महाराज के हुकम से आई है।

आखिर रूहों नसीहत, ए तो हकें देखाया ख्याल।
रूहों हक को देखाइया, कौल फैल या हाल।। ११३ ।।

अन्त में रूहों को इस तारतम वाणी से जागृति आएगी और पता चलेगा कि यह खेल तो श्री राजजी महाराज ने दिखाया है। रूहों ने अपनी कहनी, करनी और रहनी से श्री राजजी महाराज को अपना इश्क दिखा दिया।

हकें खेल देखाए के, इलम दिया बेसक।
हक हांसी करे रूहन पर, देसी सबों इस्क।। ११४ ।।

श्री राजजी महाराज ने खेल दिखाकर बेशकी का तारतम ज्ञान दिया। श्री राजजी महाराज सब रूहों पर हंसी करके अपना इश्क देंगे।

Nijanand App

कोई आगे पीछे अव्वल, इस्क लेसी सब कोए।
पेहेले इस्क जिन लिया, सोई सोहागिन होए।। ११५ ।।

कोई आगे, कोई पीछे, सभी श्री राजजी महाराज का इश्क लेंगे, परन्तु पहले जो इश्क ले लेंगे वह सुहागिनी कहलाएंगी।

महामत कहे ऐ मोमिनों, जिन हांसी कराओ तुम।
याद करो बीच बका के, किया रब्द आगूं खसम।। ११६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम व्यर्थ में अपनी हंसी मत कराओ। अखण्ड परमधाम में तुमने जो इश्क रब्द का वार्तालाप किया था, उसे अब याद करो।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ १०७४ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन

॥ प्रकरण ॥ ३८१ ॥ चौपाई ॥ १०५५६ ॥

॥ खिलवत सम्पूर्ण ॥

Nijanand App